जेहादे मुख़्तार

आयतुल्लाहिलउज़मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

रसूल[स०] के परिवार की क्रूरता के साथ तबाही ने सच्चे मुसलमानों के हृदय में जो घाव डाल दिया था वह चुपचाप शान्त होने वाला न था और ख़ुदा की ओर से भी इन ज़ालिमों को अधिक समय तक छूट मिलना इलाहिया सिफ़त के विरुद्ध था अत: इसके आसार शहादते हुसैन के दो, तीन साल के भीतर दिखने लगे और कोशिशें आरम्भ हो गयी जिनमें एतिहासिक रूप से सबसे पहले जमाअत तत्वाबीन का नाम आता है।

यह वह लोग थे जिन्होंने पहले पहल हज़रत इमाम हुसैन से कूफ़ा की ओर पलायन करने की प्रार्थना की थी और जनमत को आपकी ओर मोड़ दिया था। मगर अन्त में फिर उनके विरुद्ध संघर्ष हो गया और वह विवश हो गये क्योंकि इब्ने ज़ियाद की हुकूमत बन जाने के बाद वह भूमिगत हो गये। अन्तत: हज़रत इमाम हुसैन[अ०] करबला पहुँचे और वहाँ शहीद हो गये और यह लोग कुछ समय की मजबूरी और कुछ कुव्वते नाइरादी के कारण आप तक न पहुँच सके मगर आपकी शहादत के हाल सुनकर उनके अन्त: कारण में छुपे हुए जज़्बाते फ़िदाकारी एक दम जागे अत: उन्होंने निर्णय लिया कि यह बदनामी का छत्ता गिराने हेतु हम उस समय तक चैन से न बैठेंगे, जब तक हम उन लोगों को जो क़त्ले इमाम में सम्मिलित हुए थे उनको क़त्ल न कर दें या इसके बदले अपनी जान न दे दें। अत: उन्होंने इस प्रकरण में दोस्ताने अहलेबैत में से पाँच नामी नेताओं को चुना 1– सुलेमान बिन सर्द ख़ज़ाई (अस्हाबे रसूल[स०]), 2–मुसय्यब बिन नजवा ख़ज़ाई (अस्हाबे अली[अ०]) प्रमुख थे। 3– अब्दुल्लाह बिन साद बिन नफ़ील अज़दी, 4–अब्दुल्लाह बिन दाल तमीमी, 5–रफ़ाअह बिन शद्दाद बजली। अत: यह पाँचों व्यक्ति और दूसरे प्रमुख लोग सुलेमान बिन सर्द ख़ज़ाई के मकान पर एकत्र हुए और मुसय्यब बिन नजवा ने प्रवचन दिया जिसमें कहा कि हम अपनी सभ्यता पर तथा अपनी जमाअत पर नाज़ और फ़ख़्र करते थे किन्तु जब ख़ुदा ने हमारी परीक्षा ली तो ज्ञात हुआ कि हमारे कथन एकदम ग़लत थे क्योंकि हम ने हज़रत इमाम हुसैन को आमन्त्रित किया और पत्र भेजा कि हम आपको सहयोग देंगे किन्तु जब आप पधारे तो हमने अपनी जान चुराई और हम ने अपनी जानों, मालों अपनी कथनी से धर्म तथा कर्तव्य को पूरा नहीं किया और न अपने क़बीले को ही इस पर जुटाया अब हम ख़ुदा और रसूल को क्या उत्तर देंगे जबकि हमारा कोई भी उज़्र मानने के योग्य हो ही नहीं सकता केवल यही एक राह है कि क़त्ले हुसैन में जिस–जिस ने जिस सूरत में भाग लिया है उन सबको क़त्ल कर दें। और साथ–साथ ही मुसय्यब पुत्र नजवा और सुलेमान पुत्र सर्द दोनों की योग्यता का इक़रार किया।

(तबरी जिल्द–7 पेज–48)

या इस कार्य में स्वयं क़त्ल हो जाएं। अब आप लोगों को चाहिए कि कोई अपना नेता चुने जिसके आदेश से लड़ाई को जीता जा सके इनका व्याख्यान समाप्त होने पर रफ़ाअह बिन शद्दाद खड़े हुए और उन्होंने उनके प्रस्ताव पर प्रमोदन किया और कहा कि यदि आप उचित समझें तो आप ही को इस लड़ाई में नेता चुना जाए यदि न स्वीकार करें और अन्य लोगों की भी राय हो तो मैं अपने क़बीले के सब से वृद्ध सुलेमान बिन सर्द के सुपुर्द करूँ, जो रसूले ख़ुदा के सहाबी भी हैं और जिनके कृतव्य जो दीन के लिए उनके द्वारा निभाये गए हैं सभी को मालूम है यह अद्वितीय सूझबूझ वाले भरोसे योग्य व्यक्ति हैं। अब्दुल्लाह बिन दाल और अब्दुल्लाह बिन साद ने भी

अपने भाषणों में प्रस्ताव का समर्थन किया और अन्त में मुसय्यब बिन नजवह के अन्तिम व्याख्यान के बाद सर्व सम्मति से सुलेमान बिन सर्द को नेता चुना गया।

अब सुलेमान ने खड़े होकर एक भाषण दिया और इसको जुमे की नमाज़ के बाद दोहराते थे। निम्नलिखित है:—

हम लोग बड़ी उत्सुकता के साथ अहलेबैते रसूल[स०] के आगमन की राह देखा करते थे किन्तु जब वह आये तो हम लोगों ने कायरता का सुबूत दिया यहाँ तक कि हमारे देश में हमारे रसूल के फ़रज़न्द क़त्ल कर दिये गए और वह मदद के लिए लोगों को पुकार रहे थे किन्तु वहाँ कोई उनकी आवाज़ पर नहीं पहुँचा और ज़ालिमों के गिरोह ने उनको तीरों से छलनी कर दिया यहाँ तक कि आप शहीद हो गये और इतना ही नहीं विद्रोहियों ने शहादत के बाद आपका लिबास (परिधान) तक लूट लिया फिर अगर उठना है तो उठ पड़ो ख़ुदा का ग़ज़ब अब चल पड़ा है पर अब तय कर लो कि अपने परिवार में उस समय तक न जाओगे जब तक अल्लाह की प्रसन्नता का समान न कर लोगे और ख़ुदा की क़सम मेरे ख़याल में तो वह उस समय तक तुम से राज़ी नहीं हो सकता जब तक उनके क़ातिलों (हत्यारों) को उनके किये का दण्ड न दे दिया जाए या अपनी जान दे दी जाए, ख़बरदार मौत से न डरना क्योंकि जो मौत से डरता है वह ज़लील होता है। देखो तो जब बनी इसराईल के एक गिरोह ने गोशाला पूजन का जुर्म किया तो उनकी तौबा कैसे क़ुबूल हुई थी उनसे कहा गया कि तुम अपने नफ़्स को क़त्ल करने पर तैयार हो जाओ इस पर उस गिरोह ने क्या किया? वह ज़मीन पर बैठ गये और ख़ुदा के निर्णय के लिए तैयार हो गये इसलिए कि उनको अपने जुर्म का एहसास था और यह मालूम हो गया था कि इसके बिना तौबा क़ुबूल नहीं हो सकती अब तुम भी अगर अपने को मुजरिम समझ रहे हो तो ऐसी ही क़ुर्बानी के लिए तैयार हो जाओ। उस पर उस जमाअत ने क्या किया? वह ख़ुद को ज़मीन पर बैठा कर क़ुदरत के श्राप के लिए तैयार बैठ गये इसलिए कि उनको अपने जुर्म का सही एहसास था और यह मालूम हो गया था कि इसके बिना तौबा क़ुबूल नहीं हो सकती अब तुम भी अगर अपने को मुजरिम समझ रहे हो तो ऐसे ही त्याग के लिए तैयार हो जाओ तलवार तेज़ कर लो भालों की नोक सीधी कर लो और पूरे सामान से तैयार हो जाओ देर न होने पाये।

इस जोशीले व्याख्यान को सुनकर एकत्र जनों के अन्दर उफ़ान आया अनेक वक्ताओं ने खड़े होकर अपने विचार और जेहाद का निर्णय सुनाया अब्दुल्लाह पुत्र दाल तमीमी ख़ज़ान्ची नियुक्त हुए और तै पाया कि उनके पास रुपया एकत्र किया जाए और जोश व पक्के इरादे की यह भीड़ चली गई।

अब सुलेमान ने मदाएन माऊद पुत्र हुज़ैफ़ा पुत्र यमान और अन्य स्थानों पर कुछ दूसरे लोगों को भी पत्र लिखे इन पत्रों के मज़मून का मुख्य भाग निम्नलिखित है:—

शियाने अहलेबैत ने इस आशय पर ग़ौर किया है जो उनसे प्रकट हुआ फ़रज़न्दे रसूल के बारे में जिन्हें निमन्त्रण किया गया तो वह आ गये उन्होंने जब मदद का निमन्त्रण दिया तो उसका पालन नहीं किया गया और उन्होंने वापस जाना चाहा तो उन्हें रोका गया और उन्होंने संरक्षण चाहा तो इनकार कर दिया गया और उन्होंने चाहा कि उनको उनके हाल पर छोड़ दें, किन्तु उन्हें दुश्मनों ने न छोड़ा और उन पर आक्रमण करके शहीद कर डाला और उनके कपड़े जो पहने थे लूट लिये और लाशे पाक को वहीं छोड़ दिया अब हमारी जमाअत ने इस बात पर विचार किया है और उन्हें बड़े ज़ोर से यह एहसास हुआ है कि उनसे इस मासूम की मदद न करने में बड़ा पाप हुआ है जिसका प्राश्चियत यही है कि उनके हत्यारों को मार डालें या स्वयं अपने प्राण दे दें। अब यह सब तैयार हो गये हैं। अत: आप लोग भी तैयार हो जाएं हम ने इस कार्यक्रम के लिए एक तिथि और स्थान की घोषणा कर दी है जिसमें सबको एकत्र होना है। तिथि एक रबीउस्सानी और स्थान नख़ीला।

यह पत्र सआद को पहुँचा और उन्होंने मदाएन के शियों को पढ़कर सुनाया और ख़ुद व्याख्यान दिया जिसमें कहा कि यह सत्य है कि आप लोग हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की मदद करने की इच्छा रखते थे और जैसे ही

उनके पधारने की सूचना मिलने पर परन्तु उनके पास जाने का इरादा रखते थे। किन्तु उनकी अचानक शहादत की सूचना मिली जिससे विवश हो गये अन्तत: अल्लाह के यहाँ आप लोगों को नियतों का फल मिलेगा अब दशा यह है कि आप के दोनों भाइयों ने बेदीनों का सामना करने के लिए आप से मदद माँगी है और सोचना है इसके लिए क्या करना चाहिए सभी लोगों ने कहा हम अवश्य उनकी मदद करेंगे और सर्वसम्मति से दुश्मनाने अहलेबैत से जेहाद करेंगे, अत: सआद पुत्र हुज़ैफ़ा ने सलमान पुत्र सर्द के ख़त का उत्तर मदद करने के इक़रार के साथ रवाना कर दिया इसी प्रकार दूसरों के भी उत्तर आ गए।

यह सब कार्यक्रम गुप्त रूप से हो रहे थे। यहाँ तक कि बड़ी संख्या इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो गई जिसकी भनक किसी को न हुई तब हम सब 61 हिजरी से लेकर रबीउल अव्वल 63 हिजरी यानी यज़ीद के मरने तक ऐसे हालात न बन सके कि इस क्रम में कोई कार्य किया जाता मगर यज़ीद के मरने के बाद इस कार्यक्रम में जागरुकता उत्नन्न हुई अब लगभग प्रवेक्ष रूप से प्रचार होने लगा यहाँ तक कि ये कार्यक्रम मिस्र तक पहुँच गया और उबैदुल्लाह पुत्र अब्दुल्लाह मिस्री के व्याख्यानों ने जिनमें शहादते इमाम हुसैन[अ०] का ब्योरा कठिन शब्दों में दिया जाता था वहाँ भी उत्साह उत्पन्न हो गई।

एक रबीउल अव्वल 65 हिजरी को यह लोग नख़ीला स्थान पर एकत्र हो गए तो यह देखकर किसी हद तक दुख हुआ कि जिन लोगों ने मदद का प्रण लिया था जिनके नाम सूची अंकित हो चुके थे उनकी संख्या 16 हज़ार थी किन्तु उस तिथि पर उपस्थित केवल चार हज़ार थे, किन्तु यह लोग पक्के इरादे के थे इसलिए संख्या कम होने की चिन्ता किये बिना कार्यक्रम करने का निर्णय लिया।

कुछ लोगों का कहना था कि हुसैन[अ०] के हत्यारे अभी कूफ़ा में हैं इनसे यही समझ लेना चाहिए किन्तु सुलेमान की राय यह हुई कि सबसे बड़ा इमाम हुसैन[अ०] का हत्यारा जो इस समय मौजूद है मौजूद है, इब्ने ज़ियाद, है जिसने सुल्हनामे की कोई शर्त न मानी और कहा कि जब तक इमाम हुसैन बिना शर्त इताअत न कर लें इनको अमान नहीं मिल सकती, अत: उसके मुक़ाबले के लिए चलना चाहिए और उसे प्राप्त कर लिया जाये तो फिर इन छोटे आदमियों को सज़ा देना कौन कठिन समस्या है। सभी ने इनकी राय मान ली।

शुक्रवार 5 रबीउस्सानी 65 हिजरी को रात के अन्धेरे में यह लोग शाम के इरादे से चल दिये सबसे पहले इन लोगों ने क़ब्रे इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत की इस समय इनके रोने और बयान करने का दृश्य अजब था और प्रत्येक व्यक्ति इस इच्छा से दुखी था कि अच्छा होता कि आशूरा के दिन वह इमाम हुसैन[अ०] के साथ होता और शहादत का दर्जा पाता एक दिन और एक रात इसी प्रकार इन लोगों ने नौहा, मातम, फ़रियाद और तौबा में गुज़ारा अन्त में जज़्बात के उथल–पुथल के साथ सभी लोग क़ब्रे इमाम हुसैन[अ०] से विदा हुए, जिसके साथ सुलेमान पुत्र साद और अन्य सरदारों के बड़े भाषणों ने उनमें उत्तेजना को तीव्र कर दिया।

बुध के दिन 7 जमादिल अव्वल को प्रथम लड़ाई हुई बैरियों की सेना संख्या 12 हज़ार और यह केवल चार हज़ार फिर भी इन्हीं की विजय हुई फिर दूसरे दिन आठ हज़ार सेना और आ गई जिसे उबैदुल्लाह पुत्र ज़ियाद ने भेजा घनघोर, घमासान युद्ध हुआ जो रात तक चलता रहा मुजाहिदीनों में घायलों की सख्या अधिक थी। तीसरे दिन बैरियों की फौजी संख्या अधिक और मुजाहिद की कम हो गई। कुछ कमज़ोरी आ गई किन्तु मुक़ाबला होता रहा फिर कायर फौजियों ने तीर चलाना आरम्भ किये और एक तीर सुलेमान पुत्र सर्द को आ कर लगा और वह शहीद हो गए उस के बाद लशकर का अलम मुसय्यब पुत्र नजवह ने लिया और बड़ी बहादुरी से कई हमले किये मगर अन्त में वह भी शहीद हुए इनके बाद अब्दुल्लाह पुत्र साद पुत्र फज़ील ने अलम संभाला और क़बीला अज़दर की जमाअत को साथ लेकर मुक़ाबला किया उसी समय मदाएन के तीन सवार आए जिन्होंने बताया कि मदाएन और बसरा से कुमक रवाना हो चुकी है मगर यहाँ हालत इतनी बिगड़ चुकी थी कि इन मुजाहिदीन की ज़िन्दगी में इस कुमक के पहुँचने की

उम्मीद न थी आख़िर वह आए सवार भी जंग करते—करते शहीद हो गए। इसके बाद अब्दुल्लाह पुत्र साद और फिर अब्दुल्लाह पुत्र दाल भी शहीद हो गए।

अब शाम हो गई थी इसलिए जंग बन्द कर दी गई नामज़द सरदारों में अब सिर्फ़ रफ़ाअह पुत्र शद्दाद बाक़ी थे मगर अब हालत यह थी कि इनकी संख्या चार हज़ार से लड़कर केवल कुछ सौ रह गई थी और इनमें से भी अक्सर ज़ख़्मी थे और जंग के क़ाबिल न थे अत: मुक़ाबले में कामयाबी न देखते हुए रात के अंधेरे में मैदान छोड़ दिया इस प्रकार हुसैन[अ०] के हत्यारों का प्रथम प्रयास समाप्त हुआ।

दूसरा प्रयास जो कामयाब हुआ वह जनाब मुख़्तार पुत्र अबी उबैदा सक़फ़ी के हाथ से पूरा हुआ मगर मुख़्तार और सुलेमान पुत्र सर्द ख़ज़ाई के कार्य शैली में अन्तर था।

सुलेमान पुत्र सर्द ख़ज़ाई की सरकर्दगी में जमाअते तव्वाबीन ने जो क़ातिलाने हुसैन से बदला लेना चाहा था उसमें उन्होंने सीधे शाम की हुकूमत के विरुद्ध महाज़ छेड़ा था और वह अपनी कम संख्या की बिना पर उसे कोई ख़ास कोई माद्दी हानि नहीं पहुँचा सके मगर जनाब मुख़्तार ने महाज़ ख़ुद कूफ़ा में क़याम किया और उन लोगों को जो कर्बला में हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के मुक़ाबले में थे उन्हें क़त्ल किया यहाँ तक कि इब्ने ज़ियाद तक जो इस क्रम का सबसे बड़ा दोषी था, उनके हाथ से क़त्ल हुआ इस प्रकार उस आशय की बड़ी हद तक पूर्ति हुई जिसके लिए इस्लामी दिलो दिमाग़ बेचैन थे। मुख़्तार पुत्र उबैदुल्लाह सक़फ़ी ख़ानदानी एतेबार से अरब के रईसों में से थे। इनके पिता अबुउबैदा इस्लामी लड़ाइयों के क्रम में तसख़ीर ईरान से सम्बन्ध अक्सर शरीक हो चुके थे, अत: हसरावी अबीद की जंग इन्हीं के नाम से जुड़ी है और ख़ुद मुख़्तार अहलेबैत रसूल के हमदर्द की हैसियत से ख़ास तौर पर प्रसिद्ध थे। यद्यपि जो पत्र हज़रत इमाम हुसैन[अ०] को कूफ़ा से भेजे गए थे उनमें इनका नाम नहीं दिखाई पड़ता, ताहम जब मुस्लिम पुत्र अक़ील कूफ़ा पहुँचे थे तो आप मुख़्तार के घर पर ही रुके थे। इसके बाद जब इब्ने ज़ियाद का कूफ़े पर क़ब्ज़ा हुआ और अफ़रातफ़री हुई तो उस मौक़े पर मुख़्तार कूफ़े में नहीं थे बल्कि अपनी ज़मीनदारी में किसी गाँव में गये थे अत: मुस्लिम उनके घर से हटकर हानी के घर ठहरे फिर हानी के पकड़े जाने पर मुस्लिम को जेहाद के लिए निकलना पड़ा और अन्त में मुस्लिम और हानी दोनों शहीद हुए उसके बाद अम्र पुत्र हारिस ने रायद अमान इस एलान के साथ दी कि जो इस झण्डे के नीचे आ जायेगा उसका जान व माल बच जायेगा। उस वक़्त मुख़्तार कूफ़ा वापस पहुँचे और अम्र पुत्र हारिस के अमान रायद के नीचे मगर इनकी तरफ़ से हुकूमत कूफ़ा इस दर्जा बदज़न थी कि उन्हें इस झण्डे के नीचे पहुँच जाने पर अमान न मिल सकी इब्ने ज़ियाद ने अपने दरबार में बुलाकर अपनी छड़ी से इनके चेहरे पर ऐसी चोटें लगाईं कि इनकी आँख फूट गई और फिर इन्हें क़ैदख़ाने में डाल दिया चुनानचे जब हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की शहादत हुई तो वह कूफ़े में क़ैद थे और सम्भवत: क़त्ल कर दिये जाते मगर उनकी बहन अब्दुल्लाह पुत्र उमर की पत्नी थी और यद्दीद अब्दुल्लाह पुत्र उमर भी शुरु में यज़ीद की बैअत से इनकार करते थे, किन्तु शहादत इमाम हुसैन[अ०] मालूम होने के बाद उनका हौसला पस्त हो गया था और वह यज़ीद की तरफ़ झुकने लगे थे। उधर यज़ीद आमतौर पर आलमे इस्लामी की ख़फ़गी और बेज़ारी से प्रभावित होकर हर ऐसे आदमी की दिलजोई और मुराआत करना चाहता था कि जो कम से कम उसकी हुकूमत के विरुद्ध बोलने से रोका जा सकता था अत: इस समय पर अब्दुल्लाह पुत्र उमर की किसी बात को रद करके उनको अपने से बरगश्ता ख़ातिर करना किसी तरह से मुनासिब न समझता था। अत: अब्दुल्लाह पुत्र उमर ने मुख़्तार की बहन के बहुत कहने से मजबूर होकर यज़ीद को मुख़्तार की रिहाई के लिए पत्र लिखा और यज़ीद ने तुरन्त अब्दुल्लाह पुत्र ज़ियाद को ताकीद की कि मुख़्तार को रिहा कर दिया जाए इस तरह इब्ने ज़ियाद इनको रिहा करने पर मजबूर हो गया मगर शर्त कर दी कि तीन दिन के अन्दर कूफ़े को छोड़ देना वरना तुम्हें क़त्ल कर दिया जायेगा, अत: तीन दिन के अन्दर मुख़्तार कूफ़े से हिजाज़ की तरफ़

चले गए एक साल से ज़्यादा हिजाज़ में कई जगहों पर घूमते रहे और इस दौरान वह बराबर कहते रहते थे कि मुझे हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] के ख़ून का बदला लेना है जो मैं लेकर रहूँगा जब दमिश्क़ की नौजवान फ़ौजों ने हसीन पुत्र नमीर की सरकर्दगी में अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर के मुक़ाबले में फ़ौजकशी की और मक्का मोअज़्ज़मा का घेराव किया तो मुख़्तार उस वक़्त मक्का में थे और 3 रबीउलअव्वल 64 हिजरी को जिस दिन ख़ान–ए–काबा में आग लगाई गई और शाम की फौजें शहर मक्का में दाख़िल हुईं तो मुख़्तार ने शाम वालों के मुक़ाबले में तन तनहा बहुत जुराअत और हिम्मत के साथ सख़्त जंग की यहाँ तक कि शाम वालों की हार हुई इसी बीच यज़ीद की हलाकत की ख़बर आई और शाम की फ़ौजें वापस चली गयीं। मुख़्तार इसके बाद पाँच महीने से कुछ ज़्यादा अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर के पास मक्का मोअज़्ज़मा में ठहरे रहे।

इतने समय में कूफ़े की हुकूमत में इन्क़ेलाब आया और कूफ़े वाले इब्ने ज़ियाद के नायबे हुकूमत अम्र पुत्री हारिस को निकाल चुके थे आरज़ी तौर पर आमिर पुत्र मसऊद को हाकिम बना दिया था जिसने अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर की इताअत कर ली और कूफ़े वालों से इब्ने ज़ुबैर की ख़िलाफ़त मनवाई मगर अभी तक कूफ़ा में नज़्मो नस्क़ पूरे तौर पर क़ायम नहीं हो पाया था।

मुख़्तार को यह समय क़ातिलाने हुसैन[अ॰] से बदला लेने के मुताल्लिक़ अपने मंसूबे की तकमील के लिए बहुत अच्छा मालूम हुआ वह कूफ़े की तरफ रवाना हो गये और वहाँ पहुँच कर मुख्य शिया लोगों से अपनी मुहिम के बारे में बातचीत की और बहुत से आदमी उनकी राय से मुत्तफ़िक़ हो गये।

किन्तु जब सुलेमान पुत्र सर्द ख़ज़ाई जमाअते तव्वाबीन के साथ शामियों के मुक़ाबले को निकले उस समय मुख़्तार को फिर क़ैद कर दिया गया।

सुलेमान की शहादत के बाद जब उनकी जमाअत के शेष लोग जो संख्या में कम थे रफ़ाआ पुत्र शद्दाद के साथ कूफ़े में आये तब मुख़्तार जेल में थे आख़िर में अब्दुल्लाह पुत्र उमर ने फिर अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर और इब्राहीम पुत्र मुहम्मद पुत्र तलहा को जो उस समय अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर की ओर से कूफ़े का हाकिम था मुख़्तार की रिहाई के लिए पत्र लिखा, जिसके बाद वफ़ादारी की क़समें लेने के बाद मुख़्तार को छोड़ दिया गया।

इसके बाद अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर ने इब्राहीम पुत्र मुहम्मद को हटा दिया और अब्दुल्लाह पुत्र मतीअ को कूफ़े का गवर्नर बनाया जो बृहस्पतिवार 15 रमज़ान 65 हिजरी को कूफ़े में आया।

अब मुख़्तार के साथ बहुत से प्रमुख और योद्धा जुड़ चुके थे मगर मालिके अशतर के पुत्र इब्राहीम की एक प्रसिद्ध शख़्सियत थी जिनका इस कार्यक्रम में लाना आवश्यक समझा जाता था अतः इब्राहीम को पूरी तरह से इस इरादे को बताकर उन्हें भी साथ लाया गया जिससे मुख़्तार को बड़ी कुव्वत मिली।

अब बराबर मुख़्तार इब्राहीम के यहाँ आने जाने लगे रोज़ाना शाम के समय इब्राहीम उनके यहाँ जाते थे अन्त में यह राय हुई कि बृहस्पतिवार 14 रबीउल अव्वल 66 हिजरी को कार्य प्रारम्भ कर दिया जाए।

इन लोगों ने आपस में सलाह की कि हमको क़ातिलाने हुसैन[अ॰] से बदला लेने के लिए दमिश्क़ जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि जिन लोगों ने इमाम हुसैन[अ॰] का क़त्ल किया था यहीं हैं अतः इनसे हमको बदला लेना चाहिए किन्तु इस सूरत में इब्ने ज़ुबैर की हुकूमत से इनकी भिड़न्त आवश्यक थी इसलिए कि क़ातिलाने हुसैन[अ॰] का सीधा सम्बन्ध यद्यपि हुकूमते शाम से था किन्तु यह इस समय कूफ़े के रहने वाले थे इनसे बदला लेने का अर्थ अपने हाथ में क़ाबू न लेना था और ज़ाहिर है कि हुकूमते वक़्त को इस सूरत में अपने निज़ाम की रक्षा के लिए प्रबन्ध करना था इस शहर के रहने वाले थे अतः मुख़्तार और उनकी जमाअत के लिए क़ातिलाने हुसैन[अ॰] से अपने मुताबिक़ बदला लेना सम्भव नहीं था जबकि वह कूफ़े की मौजूदा हुकूमत को समाप्त कर एक ख़ुद मुख़्तार हुकूमत न बना ले अतः इस नज़रिये के अनुसार उनका हुकूमत में ज़ुबैर के पुत्र से युद्ध आवश्यक हुआ।

फलस्वरूप अब्दुल्लाह पुत्र मतीअ को समय के ना सम्भव देखकर कूफ़े से भाग गया इस प्रकार से

मुख़्तार की हुकूमत बन गई और मुख़्तार हुकूमत पर छा गए एक ओर हुकूमते शाम जिससे सीधा क़त्ले हुसैन[अ०] का सम्बन्ध था और दूसरी ओर ज़ुबैर के पुत्र की हुकूमत जो कूफ़े में अपना पुन: हुबूल क़ायम करना चाहता था मुख़्तार से जंग करना ज़रूरी समझता था। इस सूरते हाल को देखते हुए इन अलामात की सच्चाई के बारे में बहुत कुछ समझ सकते हैं जो मुख़्तार के वास्ते अत: इतिहास में लिख दिये गए हैं। वैसे वह इल्मेग़ैब जानते थे जानते थे वह कहते थे कि मुझ पर जिबरील आते हैं उन्होंने मुहम्मद हनफ़िया की महदवियत का एलान करके ग़लत तौर पर अपने को उनका दूत बताया उनकी ओर से जाली पत्र बनाकर इब्राहीम पुत्र मालिके अशतर को अपना हम ख़याल आदि समझते हैं कि यह सब हुकूमतों की ओर से इनके विरुद्ध प्रचार था जिसकी मिसालें निरन्तर इतिहास में हमारे सामने आती हैं यहाँ तक कि अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर को यज़ीद और उसके सलाहकार लक़हद के नाम से याद करते थे फिर अजर मुख़्तार के विरुद्ध इस कबील के शब्द मिलते हैं तो उन्हें कैसे सच्चा समझा जा सकता है हमारे नज़दीक इन आरोपों का झूठा होना इन लोगों पर निगाह करने से सिद्ध हो जाता है जो मुख़्तार के साथ थे और बराबर साथ रहे जैसे अबुतुफैल आमिर पुत्र वासला पुत्र असकाए काशानी की जो सहाबिए रसूल थे इसी तरह अबु उसमान नहदी फिर रफ़ाआ पुत्र सद्दाद यज़ीद इब्ने अनस अब्दुल रहमान पुत्र साद पुत्र क़ैस और क़ारिब पुत्र आजिब और अहमर पुत्र शकीला आदि यह लोग सब दूरदर्शी और दीनदार लोग थे।

इब्राहीम पुत्र मालिके अशतर के लिये यह मान भी लिया जाए कि उन्हें ग़लत तहरीर दिखाकर अपना बना लिया था तो बाद मुख़्तार के साथ क़रीब–क़रीब रहने के उपरान्त उन्हें मुख़्तार के अक़ायद व आमाल मालूम नहीं हुए और उसके बाद वह ख़िलाफ़ न हो जाते? फिर मान लिया जाए कि उन्हें हर समय साथ रहने के उपरान्त इन बातों की जानकारी नहीं हुई तो आख़िर इन कहने वालों को इन पर मालूम कैसे हो सके जो मुख़्तार के साथ वैसे ही सम्बन्ध न रखते।

मुख़्तार का ख़ुलूस तो इससे ज़ाहिर होता है कि हुकूमत पाने के बाद भी मुख़्तार और उनके साथियों ने अपने इरादे को नहीं छोड़ा और चुन–चुन कर उन्होंने क़ातिलाने इमाम हुसैन[अ०] को क़त्ल करना आरम्भ कर दिया जिस प्रकार उनका मुख्य नारा था कि आले सिराते हुसैन इसी के मुताबिक़ इनका अमल ज़ाहिर हुआ।

इसकी शर्तें इस तरह हो गईं कि अब्दुल्लाह पुत्र ज़ियाद शाम की फौज लेकर मूसल पर आक्रमण कर दिया मुख़्तार ने उसके मुक़ाबले के लिए तीन हज़ार की जमाअत के साथ खमीद पुत्र इन्स को भेजा इस फ़ौज ने दुश्मन के लश्कर को हरा दिया मगर मारक–ए–जंग में यज़ीद पुत्र इन्स की जो पहले से बीमार था मृत्यु हो गई और बाक़र पुत्र आजिब ने फौज दुश्मन कसरत और अपनी क़िल्लते तादाद के कारण अपने अपने सरदार की मृत्यु के बाद इस मुहिम को कूफ़े से और मदद मंगवाने तक रोके रखी मुख़्तार को यह मालूम हुआ तो उन्होंने इब्राहीम पुत्र मालिक अशतर को सात हज़ार की फ़ौज के साथ वरका की मदद के लिए मूसल की ओर भेजा कूफ़े के सरदारों ने जो लगभग सब ही वह लोग थे जो हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के मुक़ाबले में जंग में शरीक हो चुके थे इस मौक़े को ग़नीमत जानकर कि इब्राहीम कूफ़े से बाहर गए हुए हैं और मुख़्तार अकेले हैं एक साथ होकर बग़ावत कर दी और मुख़्तार से जंग शुरु कर दी इनके निम्न नाम साफ़–साफ़ मिलते हैं शोश पुत्र खई, शिम्र पुत्र जिल् जौशन, मुहम्मद पुत्र अस्अद, अज़्हर पुत्र क़ैस, हजार पुत्र अल्जज़्वीर, शज़ीद पुत्र हारिस पुत्र रोयम शीवानी अम्र पुत्र हजाज़, जुवैदीइन में से कोई भी नाम कर्बला प्रकरण को पढ़ने वालों के लिए नया नहीं है।

मुख़्तार ने अपने साथ वाली जमाअत के साथ उन लोगों का साधारण मुक़ाबला जारी रखा और एक पत्र वाहक को इब्राहीम पुत्र इश्तर के पास भेज कर बता दिया कि अपनी फ़ौज के साथ तुरन्त कूफ़ा वापस आएं अत: तीसरे दिन वह अपने लश्कर के साथ कूफ़ा आए अब दुश्मनाने आले रसूल की सरकोबी का समय आ गया था अत: पकड़–धकड़ आरम्भ हो गई पहले ही पाँच सौ आदमियों का जत्था पकड़ कर मुख़्तार के पास पेश हुआ तो मुख़्तार ने कहा कि इनमें से जो जो क़त्ल इमाम

हुसैन[अ०] के मौक़े पर करबला में मौजूद हो उन्हें मुझसे बताते जाना उनकी मैं जान बख़्शी नहीं करूँगा बाक़ी सबको छोड़ दूँगा अत: चुन—चुन जिनके बारे में जुर्म सिद्ध हुआ वह क़त्ल कर दिये गए बाक़ी सबको वफ़ादारी के इक़रार के बाद छोड़ दिया गया इसके बाद मुख़्तार की ओर से शहर में मुनादी करा दी गयी कि सब लोग अपने—अपने दरवाज़े बन्द करके बैठ जायें उसे अमान होगी सिवाए उस आदमी के जो आले रसूल के ख़ून में शरीक हुआ यह दिन बुध 24 ज़िलहिज्जह 66 हिजरी का है।

अबू उमराह कीसान पुलिस अफ़सर थे चूँकि अब क़ातिलाने हुसैन[अ०] घरों में छुपकर बैठ गए थे इसलिए अबू उमरह की ड्युटी लगी कि एक हज़ार मज़दूर साथ ले जाये और जो जो ज़ालिम करबला में शरीक हुए थे उनके घरों को गिरा दिया जाए क्योंकि अबू उमराह इन लोगों को ख़ूब जानते थे अत: उन्होंने बहुत से घरों को गिरवा दिया और बहुत से दुश्मनाने अहलेबैत क़त्ल किये गये।

अब बड़े—बड़े लोग जो क़ातिलाने इमाम हुसैन[अ०] में से थे मार डाले गये जैसे शिम्र ज़िल जौशन, अब्दुल्लाह पुत्र असद, मालिक पुत्र नसरबद, हमल पुत्र मालिक महारबी, ज़्याद पुत्र मालिक, अमरान पुत्र ख़ालिद, अब्दुर्रहमान पुत्र अबी ख़शक़ारा, बजली अब्दुल्लाह पुत्र क़ैस ख़ूलानी, अब्दुल्लाह पुत्र सनख़ान, अब्दुर्रहमान पुत्र सलखव, अब्दुल्लाह पुत्र वहू, उसमान पुत्र ख़ालिद जहानवी, बशर पुत्र सौसा कावजी, ख़ूली पुत्र यज़ीद असहजी, उमर पुत्र साद, हकीम पुत्र तुफ़ैल ताई, ज़ैद पुत्र वक्त जहानवी, हुरमला पुत्र काहिल असदी, उमर पुत्र सवीह सैदाक़ी और क़ैस पुत्र असास।

कूफ़े की मुहिम के बाद मुख़्तार ने इब्राहीम को फिर इब्ने ज़ियाद से जंग के लिए भेज दिया मूसल से पाँच फ़रसख़ पर ख़ूँरेज़ जंग हुई कड़ा मुक़ाबला हुआ और शाम की फ़ौज की हार हुई और ख़ुद पुत्र ज़्याद इब्राहीम के हाथ मारा गया इसके अलावा हसीन पुत्र नमीर सकूनी और शरजील पुत्र ज़िलकलाह जो शाम के दो प्रसिद्ध सरदार थे वह इस जंग में मारे गए इब्राहीम ने इब्ने ज़ियाद का सर काट कर मुख़्तार के पास भेजा और मुख़्तार ने मुहम्मद पुत्र हनफ़िया के पास भेज दिया इसके बाद इब्राहीम ने मूसल और आसपास सभी ओर क़ब्ज़ा करके उम्माल नियुक्त कर दिये और नसीबैन में जाकर रुके, मुख़्तार अब कूफ़े में अकेले रह गए।

इब्ने ज़ुबैर को मुख़्तार से बैर बन चुका था इराक़ में बसरा पर अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर का क़बज़ा था उसी दौरान उन्होंने बसरा के स्थानीय हाकिमों को जो अधिक उनके निकट थे और भरोसे के क़ाबिल थे उनको हटा करके अपने भाई मुसअब पुत्र ज़ुबैर को बसरा का हाकिम बनाया। हो सकता है कि उसी समय उसका मक़सद मुख़्तार से मुक़ाबले में मुहिम का सर अंजाम देना था।

इधर कूफ़े से जो क़ातिलाने हुसैन[अ०] मुख़्तार के हाथों बच कर किसी प्रकार निकले जैसे शीश पुत्र रबई मुहम्मद पुत्र आरा अशशर है पुत्र मसकद सनान पुत्र इन्स और अब्दुल्लाह पुत्र उरवह ख़शमी आदि वह सीधे मुसअब पुत्र ज़ुबैर के पास बसरा पहुँचे और उन्होंने भी उसको मुख़तार से जंग करने के लिए उकसाया ख़ास तौर से शीश पुत्र रिबई और मुहम्मद पुत्र शीश ने बड़े जोड़—तोड़ के साथ अपनी मज़लूमी की ग़लत कहानियाँ सुनाकर रोने—धोने से काम लिया और कूफ़े पर आक्रमण करने की राय दी।

दैनूरी का कहना है कि दस हज़ार कूफ़े वाले धीरे—धीरे निकल कर बसरा पहुँच गये और इन सबने मुहम्मद पुत्र अशीश के नेतृत्व में मुसअब को कामयाबी का यक़ीन दिलाया इस बीच एक वाक़िआ ये हुआ कि अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर ने मक्का मोअज़्ज़मा में मुहम्मद पुत्र हनफिया के रिश्तेदारों और उन कूफ़े के आदमियों को जो मक्का में थे पकड़ लिया और एक समय मुक़र्रर कर दिया कि यदि उस समय तक उन्होंने बैअत न की तो सब ज़िन्दा जला दिये जायेंगे मुहम्मद हनफ़िया ने एक पत्र वाहक द्वारा इसकी ख़बर मुख़्तार को दी मुख़्तार ने कूफ़े से फौज रवाना कर दी जिसने मक्का जाकर मुहम्मद हनफ़िया और उनके साथ वालों को क़ैद से रिहाई दिलाई यह लोग तो पुत्र ज़ुबैर का ख़ात्मा कर देने के लिए तैयार थे मगर मुहम्मद हनफ़िया ने हरम में ख़ूँरेज़ी को सख़्ती के साथ मना किया। अत: यह लोग इब्ने हनफ़िया को

बक़िया..... पेज 34 पर

बस इसी को हमने नादान दोस्ती का नाम दिया है। हमें समझ लेना चाहिए कि अगर कर्बला में जनाब अब्बास[अ०] का किरदार न होता तो क़यामत तक न तो वफ़ा का मफ़हूम समझ में आता न ही इताअते इमाम की हक़ीक़त मालूम होती और न ही अलमदारी की अहमियत उजागर होती। कर्बला में ख़्वातीन में जनाब ज़ैनब[स०] और मर्दों में जनाब अब्बास[अ०] का किरदार सबसे जुदा है। आपने अलमदारी के लक़ब को मेराज अता कर दी आपने कर्बला में ये भी सिखाया कि अलम उठाना कमाल नहीं है बल्कि उसे बचाने की ख़ातिर बाज़ू कटवा देना कमाल है। वाक़िअ–ए–कर्बला से मन्सूब जितनी भी निशानियाँ हैं मसलन गहवारा, ताबूत, ज़ुलजनाह और ख़ास तौर पर ये सब निशानियाँ अपने अन्दर शुजाअत की दास्तानें लिए हुए हैं। हज़रत अब्बास[अ०] के अलम की शबीह उठाने वाला बहुत सोच समझ कर ये अलम उठाए ये कोई रसमी कारवाई नहीं है बल्कि ये अलम उठाना इस बात का एलान है कि दीन के परचम की सरबलन्दी के लिए जब तक बाज़ू सलामत हैं और जिस्म में ताक़त है यज़ीदियत के मुक़ाबले में डटे रहना है।

ख़ुदा नख़्वास्ता, ख़ुदा नख़्वास्ता ऐसा न हो कि जब आज़माईश का मैदान आए तो.....

बक़िया... जेहादे मुख़्तार

एक महफ़ूज़ जाय पनाह तक पहुँचा कर चले गए।

अन्त में मुसअब पुत्र ज़ुबैर ने सम्भवत: अपने बड़े भाई अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर के कहने पर ही एक बहुत बड़ा लशकर लेकर कूफ़े पर आक्रमण कर दिया मुख़्तार ने मुक़ाबले की तैयारी की मगर मशीयते इलाही का फ़ैसला कुछ और था मुख़्तार अपने मक़सदे हयात को पूरा कर चुके थे इनकी ताक़त भी इस समय एकत्र न थीं क्योंकि इब्राहीम पुत्र मालिके अशतर नसीबैन में थे और इस सूरत में इन्हें कोई ख़बर न थी मुसअब के पास फ़ौज बहुत ज़्यादा थी और मुहम्मद पुत्र अशीश रुअसाए कूफ़ा साथ थे इसलिए ख़ुद कूफ़े के बहुत से लोग जो दबे थे वह भी उसका साथ देने खड़े हो गए नीज़ मुख़्तार के ख़िलाफ़ एक गिरोही सवाल अरब और ग़ैर अरब का उठा दिया गया था और यह कहकर कि मुख़्तार ने अजमियों को अरबियों पर मुसल्लत कर दिया।

तमाम अरबों को मुख़्तार के ख़िलाफ़ भड़काया गया ताहम मुख़्तार ने अपने पास के लशकर के साथ कई दिन बड़ी बहादुरी के साथ मुसअब से जंग की जिसके दौरान इनके साथ के कई प्रसिद्ध सरदार जैसे हमर पुत्र शमीत और अब्दुल्लाह पुत्र कामिल आदि शहीद हुए इस जंग में विरोधी फ़ौज में से एक आदमी जो दुश्मनाने अहलेबैत में प्रसिद्ध था यानी मुहम्मद पुत्र अशीश मारा गया।

अन्ततः मुख़्तार के तमाम बावफ़ा साथी शहीद जंग मुन्तसिर और वह ख़ुद क़िले के भीतर घिर गए फिर कुछ बहादुरों के साथ निकल कर उन्होंने आख़िरी बार बढ़ी जवाँमर्दी के साथ जंग की और मारक–ए–जंग में 14 रमज़ान 67 हिजरी को 67 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया।

अदावत और क़सावत की हद यह थी कि उसके बाद उनकी बीवी अमरह पुत्री बिन्ते नोमान पुत्र बशीर अन्सारी को भी जिन्होंने मुख़्तार को बुरा कहने से इनकार कर दिया था मजम–ए–आम में क़त्ल कर दिया गया यक़ीनन ख़ुशक़िस्मत है वह इन्सान जो मशीयत के किसी मक़सद की पूर्ति का साधन बने मुख़्तार[र०अ०] उन ही ख़ुश क़िस्मत लोगों में से थे इनकी ज़ात के साथ क़ुदरत ने अपना एक अमली निज़ाम वाबस्ता किया था और इस निज़ाम को पूरा होने के साथ इनकी ज़िन्दगी भी ख़त्म हो गई अब वह ख़त्म नहीं हो गई बल्कि जावेदानी तौर पर बाक़ी है।

हरगिज़ नमीरद आँ कि दिलश ज़िन्दा शुद बइश्क़
सब्त अस्त बर जरीद–ए–आलम दवामे मा